राजकुमार स्पैरो

राजकुमार स्पैरो

हर कोई जानता था कि राजकुमारी बिगड़ी हुई लड़की थी.
“वह बहुत ही स्वार्थी है,” सब कहते थे.

अपनी दासियों के साथ वह बुरा और अप्रिय व्यवहार करती थी.

वह उनके साथ गाली-गलौज करती थी.

अपने अध्यापक के साथ भी अभद्र व्यवहार करती थी और अगर उसकी मनचाही बात पूरी न होती तो वह खूब ऊधम मचाती थी.

बेशक, कोई उसे डांट-फटकार न सकता था.
वह एक राजकुमारी जो थी.
हर कोई कामना कर रहा था कि
वह कभी महारानी न बने.

उसके आठवें जन्मदिन पर उसके पिता, राजा, को कहीं जाना पड़ा.
“बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, प्रिय राजकुमारी,” महल से जाते हुए उन्होंने कहा.

उस दिन राजकुमारी ने बहुत ही खराब व्यवहार किया. उसने अपने सारे उपहार तोड़ डाले और उन को मेहमानों पर दे मारा. खिलौने और गुड़ियाँ और हीरों से जड़ित वाद्य-यंत्र दीवारों से टकराने लगे और उड़ कर खिड़कियों से बाहर जाने लगे.

“अब इस गंदगी को साफ करो!” जब उसने ऊधम मचाना बंद किया तो दासियों को आदेश दिया.
“और तुम अध्यापक! एक परी-कथा पढ़ कर सुनाओ!” उसे परियों और जादूगरों की कहानियाँ सुनना अच्छा लगता था.

“बड़ी हो कर मैं एक चुड़ैल बनूंगी ताकि तुम सब को जादू से मैं मेंढक बना सकूं,” उसने कहा.
अध्यापक ने आह भरी.
“एक समय की बात है,” वह कहानी पढ़कर सुनाने लगा, “एक चुड़ैल ने एक राजकुमार पर जादू कर दिया और उसे एक छोटा जंगली पक्षी बना दिया....”
लेकिन तभी अध्यापक को रुकना पड़ा.

पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ आई और एक पक्षी उड़ता हुआ खिड़की के रास्ते राजकुमारी के कमरे में आ गया.

दासियाँ चिल्लाने लगीं और हवा में अपने झाड़ू लहराने लगीं. अध्यापक ने अपना सिर अपनी किताब से ढक लिया.
“यह एक राजकुमार है जिस पर किसी ने जादू कर दिया है!” राजकुमारी चिल्लाई.

"खिड़की बंद कर दो और स्थिर खड़ी रहो!"
उसने कड़कती आवाज़ में कहा.
"मैं इस पक्षी को पकड़ूंगी."

जब पक्षी छत के निकट कमरे
में इधर-उधर उड़ रहा था तो
किसी ने सांस भी न ली.
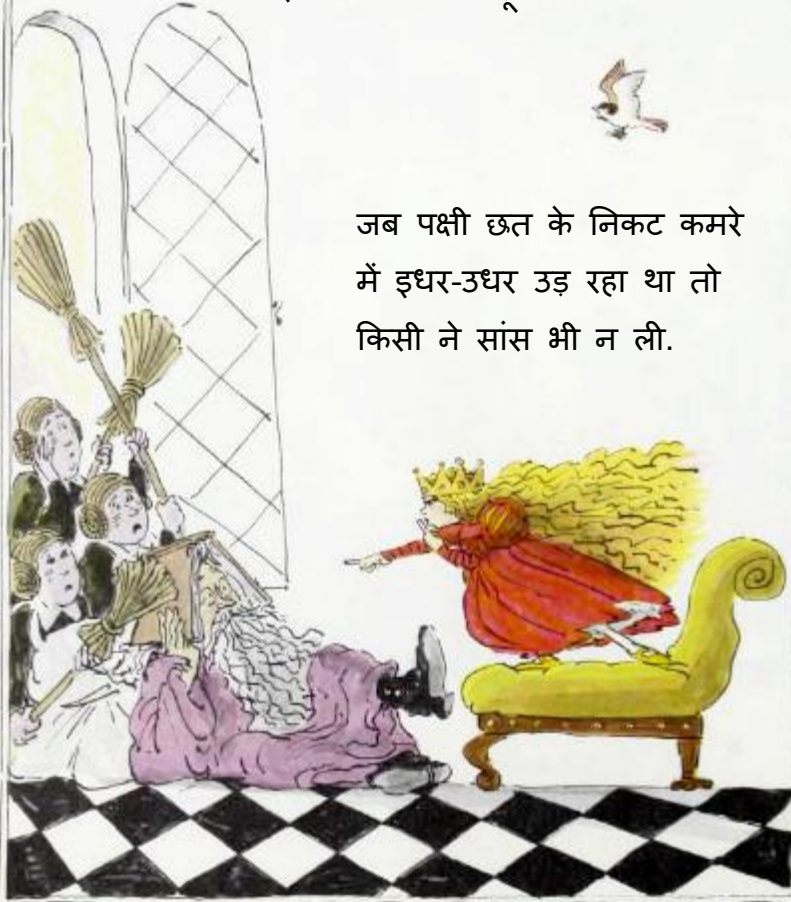
फिर थक कर पक्षी एक कोने में बैठ गया.
राजकुमारी एक बिल्ली समान रेंगती हुई
उसकी ओर चली.
"हेलो, छोटे पक्षी," उसने धीमे से कहा.
"क्या तुम सच में एक राजकुमार हो
जिसे जादू से पक्षी बना दिया गया है?"
पक्षी उसे निकट आते देखता रहा.
"चीं-चीं," पक्षी बोला.

अचानक
ज़ोर से चीं-चीं करता हुआ
वह झपटा.
आश्चर्यचकित राजकुमारी हड़बड़ा गई
और पीछे गिर गई.
"मूर्ख पक्षी!" वह चीखी
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगी!"
छत के नीचे उड़ता पक्षी
राजकुमारी पर चिल्लाया.

आखिरकार एक रोटी का टुकड़ा दिखा कर राजकुमारी ने पक्षी को फुसलाया और वह नीचे आकर उसकी कुर्सी के ऊपर बैठ गया. अपना सिर इधर-उधर हिलाते हुए वह राजकुमारी को देखने लगा.

आज तक किसी ने इतनी निडरता से राजकुमारी को देखा न था. उसने देखा कि पक्षी छोटा था लेकिन खूँखार था. वह समझ गई कि पक्षी उससे डरता न था.

“मुझे लगता है कि तुम एक राजकुमार हो और किसी ने तुम पर जादू कर दिया है,” उसने कहा. “तुम्हारा नाम होगा राजकुमार स्पैरो!”

राजकुमार स्पैरो कुर्सी के ऊपर बैठा रहा. वह रात उसने राजकुमारी के साथ उसके कमरे में बिताई.

अगली सुबह राजकुमारी ने शाही सुनार को आदेश दिया कि चाँदी का एक पिंजरा बनाये. जब पिंजरा बन कर तैयार हो गया तो उसने उस में पानी और बीज रख दिये.

राजकुमार स्पैरो पिंजरे के आसपास उड़ने लगा.
फिर उसने राजकुमारी की ओर देखा.
“अंदर जाओ,” वह बोली. “यह बहुत अच्छा है.”

राजकुमार स्पैरो अंदर गया तो राजकुमारी ने पिंजरे को बंद कर दिया.

जब पक्षी चीखने लगा और पिंजरे की छड़ों से टक्कर मारने लगा तो राजकुमारी उछल पड़ी. पक्षी पिंजरे पर परहार करने लगा.

"ऊधम मचाना बंद करो," राजकुमारी ने आदेश दिया. लेकिन वह रुका नहीं. पिंजरा डोलने लगा. "तुम अपने को घायल कर लोगे!" वह चिल्लाई. आखिरकार उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया और, टूटे हुए पंखों की बौछार करते हुए, राजकुमार स्पैरो बाहर आ गया.

“जब तुम्हें भूख लगेगी,” राजकुमारी चिल्लाई, “तो खाने के लिये तुम्हें पिंजरे के अंदर जाना पड़ेगा!” राजकुमार स्पैरो उड़ कर उसकी कुर्सी पर आकर बैठ गया और उसे घूर कर देखने लगा. सारा दिन वह वैसे ही बैठा रहा.

उस दिन शाम के समय सोने से पहले जब राजकुमारी स्ट्राबेरी और क्रीम खा रही थी पक्षी पंख फड़फड़ाता हुआ नीचे आया.

नीचे आकर वह राजकुमारी के चम्मच पर बैठ गया और स्ट्राबेरी खाने लगा.
"वह मेरी स्ट्राबेरी हैं!" राजकुमारी चिल्लाई.

राजकुमार स्पैरो उसकी ओर देख कर चीं-चीं करने लगा. उसने कुछ और स्ट्राबेरी खा लीं.
राजकुमारी हंस दीं. उसकी हंसी बहुत मधुर थी.
"यह पक्षी एक राजकुमार ही है!" राजकुमारी ने घोषणा की. "आज से इसके साथ एक राजकुमार जैसा ही व्यवहार किया जायेगा."

उस दिन से राजकुमार स्पैरो राजकुमारी के साथ ही खाना खाता. वह अपनी इच्छा अनुसार महल में आता-जाता. राजकुमारी जब स्कूल का अपना काम कर रही होती तो वह उसके कंधे पर बैठ कर ऊंघता और शाही गाड़ी में राजकुमारी के साथ बैठ कर घूमने जाता.
राजकुमारी के बाथटब में बैठ कर पानी उछालता और उसके बालों में बैठ कर अपने को सुखाता.
“तुम संसार में अकेले ऐसे पक्षी हो जो एक राजकुमारी के बालों का तौलिए की तरह उपयोग करता है!” उसने कहा.

रात के समय वह राजकुमारी के पास उसके सिरहाने पर लेट जाता और वह अपने सारे राज़ उसे बताती.
राजकुमार स्पैरो उसका पहला और अकेला और सबसे अच्छा मित्र बन गया.
एक वर्ष शीघ्र ही बीत गया.

राजकुमारी के नौवें जन्मदिन से एक दिन पहले उसने देखा कि राजकुमार स्पैरो उसके कमरे में गोल-गोल उड़ रहा था. वह खिड़की के पास आया और शीशे को चोंच मारने लगा. उसकी उदास और कर्कश चीखों ने राजकुमारी को डरा दिया.

“क्या हुआ?” उसने चिल्ला कर पूछा. लेकिन उसे लगा कि वह पक्षी की बेचैनी का कारण जानती थी. “तुम मुझे छोड़ कर नहीं जाना चाहते, क्या जाना चाहते हो?”
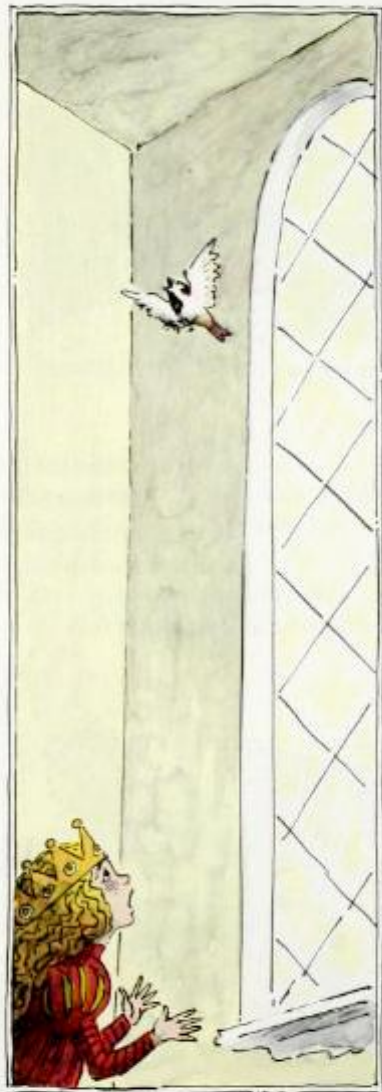
राजकुमार स्पैरो उसके पास उड़ कर आया और उसके कान में चीं-चीं करने लगा. “नहीं,” राजकुमारी ने कहा, “मैं तुम्हें जाने न दूंगी!”

राजकुमार स्पैरो खिड़की की ओर उड़ा और शीशे पर अपने पंख पटकने लगा. राजकुमारी ने अपने कान बंद कर लिए ताकि उसकी चीं-चीं न सुन पाये.

आखिरकार उसने खिड़की खोल दी.
“कृपया यहीं रह जाओ!” वह बोली.
एक पल के लिए राजकुमार स्पैरो
उसके कंधे पर आ बैठा.
फिर राजकुमारी ने पंखों के फड़फड़ाने की
आवाज़ सुनी. वह जा चुका था.

आँसुओं से भरी अपनी आँखों से राजकुमारी ने खिड़की के बाहर देखा. वसंत ऋतु का समय था. हर जगह पक्षी दिखाई दे रहे थे. वह एक-दूसरे से प्यार कर रहे थे, घोंसले बना रहे थे. उनकी चहचहाहट हर जगह गूंज रही थी. वह सब राजकुमार स्पैरो जैसे दिखते थे.

उस रात राजकुमारी ने सपना देखा कि राजकुमार स्पैरो उसके पास लौट आया था. सपने में वह पक्षी से बदल कर सच का राजकुमार बन गया और राजकुमारी उसे देख कर रोने लगी.
"तुम रो क्यों रही हो?" राजकुमार ने पूछा.
"तुम ने मुझे स्वतंत्रता दी और जादू के प्रभाव को खत्म किया. अब मैं तुम्हारी कोई भी इच्छा पूरी कर सकता हूँ!"
"मैं तुम्हें पक्षी के रूप में प्यार करती थी," राजकुमारी ने रोते हुए कहा.
"चीं-चीं!" राजकुमार बोला.
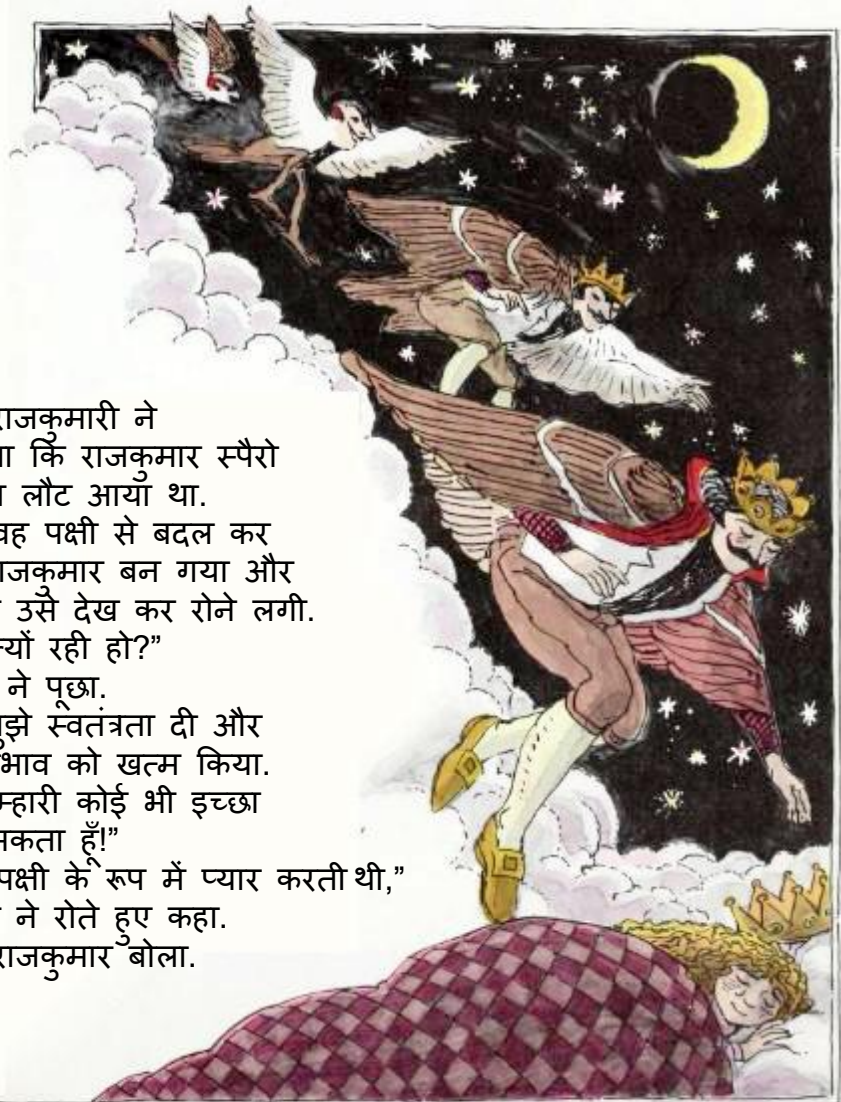
"चीं-चीं! चीं-चीं!"
राजकुमारी की नींद खुल गई और वह उठ बैठी.
"राजकुमार स्पैरो, तुम वापस आ गये!"
वह खुशी से चिल्लाई.
"तुम सच में एक पक्षी ही हो!"

राजकुमार स्पैरो फिर कभी राजकुमारी को छोड़ कर नहीं गया.
अपने शेष जीवन में वह वही रहा जो वह था, एक पक्षी.
राजकुमारी बड़ी हो कर एक महारानी बनी.

समाप्त